BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 2, April-June, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

देवलांग (मंगसीर बग्वाल) : एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ0 रीना रांगड़

सहायक प्राध्यापक, (इतिहास)

सरदार महिपाल राजेन्द्र जनजातीय (पी0जी0) कॉलेज साहिया, देहरादून

सांराश – मेले और त्यौहार एक–दुसरे से मिलने के अवसर होते है। प्राचीन समय में, जब संचार और परिवहन की कोई ऐसी सुविधा नही थी, तो मेलों और त्योहारों नें रिश्तेदारों और दूरस्थ भौगोलिक स्थानों पर रहने वाले मित्रों के साथ मुलाकात जैसे सामाजिक सम्मेलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन आयोजनों के पीछे धार्मिक महत्व और सामाजिक सन्देश होते है। उत्तराखण्ड में आज भी ऐसे मेलों का आयोजन होता आ रहा हैं जो आज भी अपनी संस्कृति को बचाए हुए है। जिनमें से एक प्रमुख मेला है देवलांग का मेला। यह मेला उत्तराखण्ड में उत्तरकाशी जनपद के रवाँई घाटी में एक प्रसिद्ध रात्रि मेले के रूप में मनाया जाता है। देवलांग प्रत्येक वर्ष दीपावली के एक माह बाद मनाया जाता है। स्थानीय भाषा में इसे मंगसीर की बग्वाल भी कहा जाता है।

मुख्य शब्द– देवलांग, बग्वाल, दियाई, थोक, साठी, पाशी।

उद्देश्य– शोध पत्र लिखने का प्रमुख उद्देश्य रवांई घाटी के परम्पराओ, उनके संस्कृति को उजागर करना तथा समाज के सामने देवलांग (मंगसीर की बग्वाल) की विशिष्टता को प्रस्तुत करना है।

शोध विधि– शोधार्थी द्वारा यह शोध पत्र वर्णानात्मक विधि से लिखा जा रहा है, जिसमे शोधार्थी द्वारा प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का सहारा लिया गया है, शोध क्षेत्र में जाकर अनुभवी व्यक्तियों का साक्षात्कार लिया गया है तथा प्रत्यक्ष अवलोकन द्वारा जानकारी प्राप्त की गयी है।

प्रस्तावना– उत्तराखण्ड अपनी बहुमूल्य संस्कृति के लिए जाना जाता है। इस पावन भूमि पर पौराणिक काल से मेलों को बड़े स्तर पर मनाने की प्रथा प्रचलित रही है। जिनमे से एक प्रमुख मेला हैं देवलांग का मेला जिसे मंगसीर की दीपावली भी कहा जाता है। यह मेला कार्तिक मास के एक महीने बाद मनाया जाता है। देवलांग मेला उत्तराखण्ड में टिहरी व उत्तरकाशी जनपद के रवाँई क्षेत्र में आयोजित होनें वाला मेला है जो देहरादून जनपद के जोंनसार–बावर क्षेत्रों में मनाई जाने वाली बूढ़ी दीपावली के समान है। लेकिन सभी क्षेत्रों में मनाने का तरीका भिन्न–भिन है। रवाई क्षेत्र के अंतर्गत बड़कोट तहसील में स्थित बनाल पट्टी के गैर गांव में देवलांग का प्रसिद्ध मेला एक रात्रि मेले के रूप में मुख्य रूप से मनाया जाता है जिसे मंगसीर की बग्वाल कहा जाता है।

यह मेला मंगसीर माह की आमावस्या की रात को ग्राम गैर(बनाल) में क्षेत्र के आराध्य देव राजा रघुनाथ (महासू) के मंदिर प्रांगण में मनाया जाता है। मेले की तैयारी स्थानीय स्तर पर एक माह पूर्व ही घरों की साफ सफाई के साथ प्रारम्भ कर दी जाती है। मंगसीर के आमावस्य के दिन बनाल क्षेत्र से एक देवदार के सम्पूर्ण अखण्डित वृक्ष को राजा रघुनाथ प्रांगण में लाया जाता है। यह वृक्ष गैर गाँव के अनुसूचित जाति के लोगो द्वारा लाया जाता है। वृक्ष लाने वालों का पुजारी जी द्वारा तिलक लगाकर स्वागत किया जाता हैं इसके पश्चात ग्राम गैर के ब्राहमणों द्वारा देवलांग का पूजन किया जाता है, विशेष पूजा अर्चना के साथ पेड़ के चारों और छिल्लक जिसे स्थानीय भाषा में होल्ला कहा जाता है जो कि चीड़ के वृक्ष की ज्वलनशील लकड़ी होती है, स्थानीय निवासियों द्वारा बांध दी जाती है। गांव के नागरिकों द्वारा छिल्लको को पेड़ के चारों ओर वृत्ताकार घेरे के रूप में विषम संख्या में बांधा जाता है, प्रत्येक वृत्ताकार घेरा किसी स्थानीय देवता के नाम समर्पित होता है।

@2025 Bihar Shodh Samaagam

रात्रि में आस पास के गांवों के लोग ढोल दमाऊ के साथ नाचते गाते समूहों में गैर गांव पहुचते है। मान्यता है कि जो भी व्यक्ति गांव में पहुंचता है वह देवदार के वृक्ष की चारों और परिक्रमा अवश्य करता है। सारी रात नाच गाने, तांदी नृत्य ढोल दमाऊ की मनोहर धुन के साथ स्थानीय गीतों की गुंज व रासौ नृत्य के साथ हर्षोल्लास के साथ बिताई जाती है। सुबह के समय पूजा अर्चना करने के पश्चात स्थानीय गांव के नागरिकों द्वारा आग प्रज्जवलित करके सभी को मशालें दी जाती है।

स्थानीय स्तर पर गांव दो समूहों साठी (साठ) जो लोग पांड्वो की ओर से लडे तथा पानशाही थोक (पांच सौ) जो कोरवों की और से लडे प्राचीन काल से ही बंटे होते है। इनके द्वारा प्रातः 04–05 बजे देवदार के वृक्ष में आग लगाकर साठी तथा पानसाई थोक के व्यक्तियों द्वारा इसे निर्धारित स्थान में खडा कर दिया जाता है, जिसे देवलांग कहते है। देवलांग का शब्दिक अर्थ देवता के लिए लाया गया देवदार का लम्बा वृक्ष है। प्रातःकाल देवलांग की पूजा की जाती है व मन्नतें मांगी जाती है। देवलांग की मुख्य विशेषता इसका नीचे से ऊपर की ओर जलना है। यह दृश्य वास्तव में देखने लायक होता है जिसे देखने हजारो लोग दूर–दूर से आते है।

देवलांग देवता को प्रसन्न करने का एक प्रयास है तथा यह माना गया है कि इसकी प्रकाश ज्योति प्रभु ज्योति है। यह ज्योति अंधकार को हरने वाली है। अंधकार को अज्ञानता का प्रतीक माना गया है। देवलांग ''तमसो मा ज्योतिर्गमयः'' अर्थात है प्रभु हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो कि भावना का पर्व है। देवलांग को मनाने की अपनी अनेक मान्यताएं प्रचलित है जो निम्न प्रकार से है।

मान्यता 1 – शिवपुराण के अनुसार ब्रहमा वं विष्णु भगवान में आपस में श्रेष्ठता को लेकर विवाद हो जाने के कारण एक दूसरे का वध करने को तैयार हो गये इससे समस्त देवताओं में भय का वातावरण बन गया और वह शिव के पास गये और उनसे इस विवाद का समाधान करने का अनुराध करने लगे, शिव जी ब्रहमा व विष्णु के मध्य एक ज्योति के रूप में खडे हो गये व आकाशवाणी हुई कि जो इस ज्योति का आदि या अन्त का पता लगायेगा वही श्रेष्ठ कहलायेगा, ब्रहमा जी उपर की ओर उड़े व विष्णु जी नीचे की और किन्तु दोनो मे से कोई भी ना आदि ओर ना ही अंत का पता लगा सका। उनके द्वारा जहां से प्रारम्भ किया गया वे वहीं आ गये। अन्त में दोनों ने अपनी हार स्वीकार की ओर यह माना कि हमसे भी श्रेष्ठ कोई अन्य सत्ता है, जिस कारण से दोनो ने अपनी हार स्वीाकर की ओर यह माना कि हमसे भी श्रेष्ठ कोई अन्य सत्ता है, जिस कारण से दोनो उस ज्योति को श्रेष्ठ मानने लगे। इस झगडे को शान्त करने के लिए ही शिव द्वारा इस ज्योति की उत्पति की गई थी। अतः इस प्रकार देवलांग का शाब्दिक अर्थ देव अर्थात देव महादेव की ज्योति व लांग का तात्पर्य लिंग से या लम्बा से है, देवदार का लम्बा वृक्ष लिंग का प्रतीक है। देवलांग के पर्व का सम्बन्ध महादेव की ज्योति से सम्बन्धित लम्बे वृक्ष से है।

मान्यता 2 – दूसरी मान्यता के अनुसार जब महाभारत का युद्ध हुआ था तो उसमें सम्पूर्ण भारत के वीर योद्धाओं ने भाग लिया। बनाल क्षेत्र को भी युद्ध में शामिल होने का निमंत्रण प्राप्त हुआ। जो क्षेत्र कौरवों के साथ गया वह सांठी थोक कहलाये जिसमें बनाल पट्टी के ईड़क सिड़क, विसाटगांव, घण्ड, थानकी, भानकी, घण्डाल गांव व्याली, गौल, गडोली, सिना, भटाडी आदि आते हैं, और जो पांडवो के साथ गये वो पांशायी कहलाये जिसमें बखरेटी, कुणी, कोटला, सिशाला, बिगराडी ,करनाली, झुमराडा, नत्थेड़ गांव आदि आते है। इस विरासत को आज भी बनाल पट्टी के लोगों ने जिन्दा रखा हुआ है। देवलांग को खड़ा करते समय साठी तथा पांशायी द्वारा प्रतीकात्मक युद्ध आज भी देखने को मिलता है।

मान्यता 3 – तीसरी मान्यता यह भी है कि प्राचीन काल में आवागमन के साधन नहीं थे इस कारण श्री राम जी के अयोध्या आगमन की सूचना रंवाई क्षेत्र में एक माह बाद पहुंची इस कारण इसी दिन को दीपावली के रूप में मनाया गया जसे मंगसीर की बग्वाल भी कहा जाता है।

मान्यता 4 – एक अन्य जनश्रुति के अनुसार मान्यता है कि किसी व्यक्ति द्वारा झुठी शिकायत पर टिहरी नरेश द्वारा वीर भड़ माधों सिंह भण्डारी जो कि एक वीर सेनापति था, को अपने दरबार में बुलाया गया यह दिन कार्तिक मास की दीपावली का दिन था, सम्पूर्ण जनता द्वारा यह पता चलने पर किसी भी घर में दिये नहीं जलाये गये जब एक माह बाद माधों सिंह भण्डारी सकुशल वापस लौटे तो सम्पूर्ण जनता द्वारा इस दिन उनके स्वागत में दीये जलाये गये व खुशी मनाई। अन्य मान्यता के अनुसार माधो सिंह भण्डारी को गढवाल राजा द्वारा नेपाल विजय हेतु भेजा गया, मंगसीर माह में आमावस्य के दिन माधो सिंह भण्डारी विजय प्राप्त करके लौटे, नेपाल विजय के उपलक्ष में भी इस दिन दीपावली मनाये जाने की मान्यता प्रचलित है।

मान्यताएं जो भी हो देवलांग का यह पर्व रंवाई की सांस्कृतिक विरासत का एक सर्वोतम उदाहरण है। जिसे स्थानीय रंवाई के लोगों द्वारा सदियों से संजोकर रखा है। इसके द्वारा रंवाई के रीति रिवाज, रहन, सहन, भाषा–बोली, खान पान की एक झलक अवश्य मिलती है।

रंवाई घाटी में होने वाले देंवलांग का पौराणिक मेला रंवाई घाटी की सांस्कृतिक एवं सामाजिकता को प्रदर्शित करता है। देवलांग के लिए सभी मुल निवासी जो अपनी आजीविका अर्जन हेतु देश विदेश के अन्य भागों में गये है, इस दिन अपने घर अवश्य आते है। घर की महिलाओं द्वारा इस अवसर पर संवाले (पूरी), काली दाल (उड़द) के पकोडे, चिउड़ा (लाल चावल को भिगोकर, भूनकर ओखली में कुठ कर बनाया जाता है) अवश्य बनाया जाता है। प्रत्येक घर आने वाले नये मेहमान का स्वागत तिलक लगाकर किया जाता है। रंवाई क्षेत्र अपनी मेहमान नवाजी के लिए प्रसिद्ध रहा है, इस अवसर पर पुरूष व महिलाओं द्वारा अपने पारंपरिक परिधान–(धोती, खिलका, सापा, गातर) तथा पुरूषों द्वार (सुतन)पिजामा, (खिलका) कमीज पहने जाते है। राजा रघुनाथ के मंदिर में व देवलांग के सामने नतमस्तक होकर अपने व अपने परिवार के कल्याण की मनोकामना मांते है।

निष्कर्ष – यद्यपि देवलांग का त्योहार हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। किन्तु देवदार के पेड़ में छिलकों में लगाने वाली आग से लगातार अनहोनी का भय बना रहता है। अतः आवश्यकता इस बात की क्षेत्र के लोग आपस में विचार विमर्श करके इस प्रकार की कार्ययोजना बनाये जिससे इस प्रकार के भय से बचा जा सके।

संदर्भग्रन्थ सूची

01. https://janmanchaajkal.blogspot.com/2014|
02. https://www.livehindstan.com/uttarakhand/story-residents-from-rawaein-valley-gears-ford-devlang-mela-in-uttarkashi-district-2299231.html|
03. रावत, मनमोहन सिंह, रंवाई कल आज और कल, पृष्ठ संख्या 75–77
04. युगवाणी पत्रिका, दिसम्बर 2006,पहाडी दीपावली–देवलांग, पृष्ठ संख्या 40–41
05. दैनिक समाचार पत्र, हिन्दूस्तान 23 नवम्बर 2019।
06. दैनिक समाचार पत्र, दैनिक जागरण 08 दिसम्बर 2018।
07. साक्षात्कार, श्री सचिदानन्द सेमवाल, ग्राम बनाल, आयु 50, व्यवसाय –शिक्षक, जिला– उत्तरकाशी।
08. साक्षात्कार, श्री कुलदीप सिंह रांगड़, ग्राम–डोभाल गांव, आयु 40, व्यवसाय–शिक्षक, जिला – उत्तरकाशी।